SJIF Impact Factor - 5.54

E- ISSN 2582-5429

AKSHARA

Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

April 2022 Special Issue 05 Volume I (A)

हिंदी साहित्य : विमर्श के विविध आयाम

* अतिथि संपादक *

डॉ. अनंत केदारे
सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग

डॉ. भाऊसाहेब नवले
उपप्राचार्य एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग

लोकनेते डॉ.बाबासाहेब विखे पाटील (पद्मभूषण उपाधि से सन्मानित)
प्रवरा ग्रामीण शिक्षण संस्था का कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, सात्रल, अहमदनगर (महाराष्ट्र)

Chief Editor : Dr. Girish S. Koli, AMRJ
For Details Visit To - www.aimrj.com

Akshara Publication

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
April 2022 Special Issue 05 Volume I (A) SJIF Impact- 5.54

Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

April 2022

Special Issue 05 Volume I (A)

हिंदी साहित्य : विमर्श के विविध आयाम

अतिथि संपादक

डॉ. अनंत केदारे
सहयोगी प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,

डॉ. भाऊसाहेब नवले
उपप्राचार्य एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,

लोकनेते डॉ. बालासाहेब विखे पाटिल (पद्मभूषण उपाधि से सम्मानित) प्रवरा ग्रामीण शिक्षण संस्था का कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, सात्रल, अहमदनगर (महाराष्ट्र)

Akshara Publication
Plot No 143 Professors colony,
Near Biyani School, Jamner Road, Bhusawal Dist Jalgaon Maharashtra 425201

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
April 2022 Special Issue 05 Volume I (A) SJIF Impact- 5.54

Sr.No	Title of the Paper	Author's Name	Pg.No
30	स्त्री स्वतंत्रता की तलाश 'हॉकी खेलती लड़कियाँ '	डॉ. सारिका भगत	96
31	उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में नारी जीवन	डॉ. नवनाथ गाड़ेकर	99
32	मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री विमर्श	सतीश मधुकर साळवे	102
33	अनामिका की कविताओं में स्त्री संवेदना	डॉ. संतोष विजय येरावार	106
34	डॉ. रमाकांत श्रीवास्तव की कहानियों मे स्त्री - विमर्श और दलित चेतना	प्रा. ललिता भाऊसाहेब घोडके	109
35	कनउजी लोकगीतों में नारी-विमर्श	शिखा पाण्डेय	112
36	रामदरश मिश्र के उपन्यासों में स्त्री-विमर्श	प्रा. डॉ. बेबी राघू कोलते	115
37	श्रीप्रकाश मिश्र के उपन्यासों में जनजातीय विमर्श	सुशील कुमार	118
38	'ग्लोबल गाँव के देवता 'का आलोचनात्मक अध्ययन	डॉ.सानिया गुप्ता	124
39	गीतकार जावेद अख्तर की प्रासंगिक प्रयोगशीलता	प्रा. डॉ . शिवाजी उत्तम चवरे	128
40	हिंदी साहित्य में दलित विमर्श	डॉ. मनिषा गंगाराम मुगळीकर	131
41	हिंदी साहित्य में दलित विमर्श	कु. साळवे मंगल भाऊसाहेब	134
42	ਕਸ਼ਮੀਰੀ ਸੰਗੀਤ ਦੇ ਰਿਵਾਇਤੀ ਸਾਧਨ	ਡਾ.ਰਾਜਬੀਰ ਸਿੰਘ ਸੋਢੀ*	137

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
SJIF Impact- 5.54
April 2022 Special Issue 05 Volume I (A)

39 गीतकार जावेद अख्तर की प्रासंगिक प्रयोगशीलता

प्रा. डॉ . शिवाजी उत्तम चवरे
सहयोगी प्राध्यापक एवं अध्यक्ष हिंदी विभाग
प्रा. संभाजीराव कदम महाविद्यालय ,देऊर- सातारा, महाराष्ट्र

प्रस्तावना : समकालीन गीतकारों के समक्ष 'वेटरन' और 'सीनियर' हो चुके जावेद अख्तर अब भले ही कम गीत लिखने लगे हों इसकी भी एक वजह उनका एक्टिविज्म है – लेकिन गीतकार सदैव से जिस आइडियलिज्म की बातें अपने गीतों में करते रहे हैं, उसे कई बरस से जावेद अख्तर ने प्रतीकात्मक लड़ाइयों से आगे ले जाकर जमीन पर लड़ना शुरू कर दिया है। यह कहना दुरुस्त होगा कि इतिहास अगर महान गीतकारों को उनके गीतों के लिए याद रखेगा, तो वो जावेद अख्तर को उनके सामाजिक सरोकारों के लिए भी याद करेगा। इतिहास अगर महान गीतकारों को उनके गीतों के लिए याद रखेगा तो जावेद अख्तर को उनके सामाजिक सरोकारों के लिए भी हमेशा याद करेगा। जावेद अख्तर ने साल १९८१ में फिल्म सिलसिला से गीत लेखन का सफर शुरू किया। फिल्म 'सिलसिला' में जावेद के गीत 'देखा एक ख्वाब तो सिलसिले हुये और ये कहां आ गये हम । ' श्रोताओं के बीच काफी लोकप्रिय हुये। तब से अब तक उन्होंने लगभग ८० फिल्मों के लिए गीत लिखे हैं। उन्होंने एक से बढ़कर एक गीत लिखकर जन जन के हृदय के तार झनझनाये और फिल्मी गीत गंगा को समृद्ध किया।

गीतकार जावेद अख्तर की प्रासंगिक प्रयोगशीलता:

हिंदी सिनेमा के गीतों को अपनी कलम से जादुई अंदाज़ देने वाले जावेद अख्तर लिखित फिल्म बॉर्डर का सबसे खूबसूरत गीत सही मायनो में भारत के सभी फौजी भाइयों के लिए एक सच्ची सदभावना है।

"संदेशे आते हैं,
हमें तड़पाते हैं,
तो चिट्ठी आती है,
वो पूछे जाती है,
के घर कब आओगे
लिखो कब आओगे
के तुम बिन ये घर सूना सूना है"

ये वो पंक्तियाँ हैं जो आज भी सुनने वाले की आँखे नम कर जाती हैं। हिंदी सिनेमा के गीतों को अपनी कलम से जादुई अंदाज़ देने वाले जावेद अख्तर लिखित फिल्म बॉर्डर का सबसे खूबसूरत गीत सही मायनो में भारत के सभी फौजी भाइयों के लिए एक सच्ची श्रद्धांजलि है।

जावेद अख्तर (जन्म १७ जनवरी १९४५) भारत के एक कवि, गीतकार और पटकथा लेखक हैं। वर्ष १९९९ में, उन्हें पद्म श्री पुरस्कार और वर्ष २००७ में, उन्हें पद्म भूषण पुरस्कार से सम्मानित किया गया। फिल्मों में सर्वश्रेष्ठ गीतों के लिए 5 बार राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। फ़िल्में निम्न हैं : साज़ (१९९६) , बॉर्डर (१९९७), गॉडमदर (१९९८), रेफ्यूजी (२०००) और लगान (२००१), इत्यादि। वर्ष २०१३ में उनकी कविता संग्रह- 'लावा' के लिए, साहित्य अकादमी पुरस्कार के साथ-साथ उन्हें १३ बार फिल्मफेयर अवॉर्ड से सम्मानित किया गया।

जावेद अख्तर ने साल १९८१ में फिल्म सिलसिला से गीत लेखन का सफर शुरू किया। फिल्म 'सिलसिला' में जावेद के गीत 'देखा एक ख्वाब तो सिलसिले हुये और ये कहां आ गये हम । । ' श्रोताओं के बीच काफी लोकप्रिय हुये। तब से अब तक उन्होंने लगभग ८० फिल्मों के लिए गीत लिखे हैं। उन्होंने एक से बढ़कर एक गीत लिखकर जन जन के हृदय के तार झनझनाये और फिल्मी गीत गंगा को समृद्ध किया।

यह एक सर्व विदित तथ्य है की सामान्य भारतीय जनमानस संगीत और गीतों से जीवन का दर्शन प्राप्त करता है। भारत में फिल्मो और गीतों का चलन आजादी के पूर्व से ही चला आ रहा है। इसलिए आजादी के पूर्व से लेकर ६०-७० के दशक तक सामाजिक, नैतिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक घटनाओं को ध्यान में रखकर फिल्मो और गीतों को निर्माण किया जाता था। ताकि इस माध्यम से भी लोगों में स्वतंत्रता और जनचेतना का संदेश प्राप्त हुआ करता था।

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
April 2022 Special Issue 05 Volume I (A) SJIF Impact- 5.54

७०-९० के दशक में स्वतंत्रता और जनचेतना का स्वरूप बदलकर फिल्मो और गीतों ने सामाजिक और वैचारिक रूप धरण कर लिया। वहीं ८० से ९० के दशक में सामाजिक के साथ-साथ फिल्मो और गीतों में प्रेम और प्रेम के माधुर्य स्वभाव का अनोखा संगम देखने को मिला। लेकिन सामाजिक गीतों के सुरो में कमी आने लगी थी। ९० से २००० तक संगीत के नयें यंत्रो की मदद से कई नवीन कलाकार उभरे लेकिन उस वक्त भी ७० से ९० तक के गीतों का वहीं महत्व रहा जो १९९०-२००० के गीतों और गीतकारों का था।

लेकिन २००० के बाद जो गीत अब लोगों को सुनने को मिल रहा है वह लोगों की मन और आत्मा को शांति देने की बजाये मन और जन को काफी व्याकुल और अशांत करने लगे हैं। बाजार और बिकनी के चंगुल में गीतकार और संगीतकार ने गीतों का स्तर इस कदर गिरा दिया है कि चंद दिनों या महिनों में ही गीत बेजान या बेकार सी लगने लगती है। ऐसे में जावेद अख्तर द्वारा लिखित गीत अवं सामान्य जान मानस पर इसके प्रभाव का विश्लेषण करना जरूरी हो जाता है। उनके लिखे हरेक गीत में एक अपनापन होता है, जिसे लोग आत्मीयता के साथ जाने –अनजाने में गुनगुनाते हैं।
उदाहरणार्थ,आप निम्नलिखित पंक्तियाँ को पढ़िए;

"ये तेरा घर ये मेरा घर, किसी को देखना हो गर
तो पहले आके माँग ले, मेरी नज़र तेरी नज़र
ये घर बहुत हसीन है". ....
"देखा एक ख्वाब तो ये सिलसिले हुए
दूर तक निगाहों में हैं गुल खिले हुए "
"एक दो तीन, चार पाँच छै सात आठ नौ, दस ग्यारह बारह तेरह"

'एक लड़की को देखा', 'पापा कहते हैं', 'राधा कैसे न जले', 'कल हो ना हो', वीर-जारा जैसी लोकप्रिय गीत भी जावेद अख्तर की लेखनी का कमाल है।

समय के दौरान गीत के गीतों में बदलाव के बारे में बताते हुए जावेद अख्तर कहते हैं कि "पहले, एक गीतों में संवेदनशीलता थी, सामाजिक न्याय और मानवीय मूल्यों के तत्व थे। लेकिन वह अब गायब हो गया है। आज, एक गीत सुना नहीं जाता है, लेकिन विपणन और दृश्यों के कारण देखा जाता है। १९९३ के बॉलीवुड फिल्म खलनायक और अन्य गीत "चोली के पीछे " के विभिन्न उदाहरणों का हवाला देते हुए उन्होंने कहा था कि वह दबाव में होने के बावजूद इस तरह के गीत नहीं लिखेंगे और आश्चर्य व्यक्त किया कि परिवार ऐसे गीतों पर नृत्य का आनंद कैसे ले सकते हैं।

जावेद अख्तर मानते हैं की आज के गीतों में चरित्र और स्थिति में कोई भावनात्मक गहराई नहीं है। इसलिए, अगर लेखक इसे लिखने की कोशिश करता है, तो भी अच्छे और भावनात्मक गीतों के लिए कोई जगह नहीं है। शब्द एक गीत का चरित्र है और अंततः वही रहता है। केवल वे ही गीत बचे हैं जो अच्छी तरह से लिखे गए हैं।
उदाहरणार्थ ,

"जो घरों को छोड़ के हैं चले , उन्हें क्या डराएंगे फ़ासले"
फिल्म रिफ्यूजी की ये लाइन बहुत कुछ बयां कर जाती है।
"ऐ गुजरने वाली हवा बता, मेरा इतना काम करेगी क्या
मेरे गाँव जा मेरे दोस्तों को सलाम दे
वहीं थोड़ी दूर है घर मेरा, मेरे घर में है मेरी बूढ़ी माँ
मेरी माँ के पैरों को छू के तू, उसे उसके बेटे का नाम दे"

इन पंक्तियाँ से उन्होने फौजी भाइयों के दर्द के सही मायनो में जन सामान्य के समक्ष रखा।

हिंदी फिल्म गीतों के इतिहास और वर्तमान में कई गीतकार हुए जिन्होंने अपने गीतों में अन्याय के खिलाफ मशाल जलाए रखी। शैलेंद्र, साहिर लुधियानवी, मजरूह सुल्तानपुरी, कैफी आजमी, मखदूम से लेकर गुलजार, स्वानंद किरकिरे और इरशाद कामिल तक ने जब-तब समाज, सरकार और घाघ ताकतों को अपने गीतों के माध्यम से कटघरे में रखा। रूमानी लफ्जों की मांग करने वाले गीतों तक में मजलूमों के हक की बात करने की जगह निकाली और समाज में व्याप्त असमानता पर जमकर कुठाराघात किया। लेकिन कितने गीतकार हुए, जिन्होंने मशहूर होने के बाद अपने गीतों से परे हटकर बदलाव लाने की कोशिश में जमीनी स्तर पर काम किया। आज के वक्त में ऐसा सिर्फ जावेद अख्तर कर रहे हैं। कुछ वक्त पहले की बात है, जब हिंदी फिल्म संगीत के क्षेत्र में सबसे

AMRJ
E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
April 2022 Special Issue 05 Volume I (A) SJIF Impact- 5.54

ज्यादा दबदबा रखने वाली म्यूजिक कंपनी टी-सीरीज ने जावेद अख्तर के लिखे पुराने व सुंदर गीत 'घर से निकलते ही' को रीमिक्स किया। लेकिन बेचा उसे रीप्राइज्ड वर्जन कहकर, अर्थात दोबारा तैयार की हुई कोई रचना। रचना में कुछ नया नहीं रचा बल्कि नयापन जबरदस्ती ठूंसने के लिए जितना कुछ भी किया उसने मौलिक रचना को ठेस पहुंचाई।

टी-सीरीज के दबदबे के आगे वैसे भी फिल्म इंडस्ट्री में कोई म्यूजिशियन ज्यादा कुछ बोलता नहीं। फिल्म इंडस्ट्री का इतिहास भी इसकी ताकीद करता ही है कि जो बोलता है वो खोता है। लेकिन जावेद अख्तर बोले और बाकियों की तरह 'पुराने गानों को उनके हाल पर छोड़ देना चाहिए' जैसा कुछ कहकर सिर्फ प्रतीकात्मक विरोध नहीं किया। उन्होंने सख्त कदम उठाया और सीधे टी-सीरीज को कानूनी नोटिस भेजा। कानूनी नोटिस ने शुरुआती बदलाव ये किया कि टी-सीरीज ने चुपचाप सबके नाम शामिल किए। जावेद अख्तर के विरोध का मकसद सिर्फ अपना क्रेडिट यूट्यूब विवरण में शामिल करवाना नहीं था । वे संगीत उद्योग की उस पुरानी मानसिकता की जड़ पर वार करना चाहते हैं जिससे लड़ाई लड़-लड़कर कई संगीतकार हार चुके हैं।

टी-सीरीज को कानूनी नोटिस भेजने के बाद उन्होंने इसे गुंडागर्दी बताते हुए गुस्से में कहा tha , 'आज मेरे चिर-परिचित गीत के लिरिक्स बदले हैं, क्या पता कल वे फैसला ले लें कि कवि प्रदीप के 'ऐ मेरे प्यारे वतन' के लिरिक्स बदलने चाहिए और जिस देशभक्ति के गीत को सुनकर देशवासी रो पड़ते हैं वो गीत फिर नए लिरिक्स के साथ हमें दूसरी तरह से रुलाए!' जावेद अख्तर का यह अंदाज उस म्यूजिक इंडस्ट्री पर तीखा तंज है जिसकी पूंजीवादी कार्य प्रणाली कई कलाकारों को उनके हक से महरूम रखे हुए है।

२०१० के आसपास ही संगीतकार म्यूजिशियनों को अधिकार दिलाने के लिए कॉपीराइट एक्ट, १९५७ में संशोधन की मांग जावेद अख्तर और साथियों ने बुलंद की थी और आखिरकार २०१२ में राज्य सभा व लोक सभा में कॉपीराइट अमेंडमेंट बिल पारित होकर पास हुआ था। तब बतौर राज्य सभा सांसद जावेद अख्तर ने इस सदन में क्रांतिकारी भाषण दिया था और उसी दिन के बाद से लेखकों, गीतकारों को अपने शब्दों पर वाजिब हक मिलना शुरू हुआ। संगीतकारों के अलावा बैकग्राउंड स्कोर देने वालों और शास्त्रीय व लोक संगीत रचने वालों को भी रॉयल्टी का १२ प्रतिशत मिलने का कानून पास हुआ।

कवि का गुस्सा अगर सही रास्ते पकड़ ले तो जमीनी स्तर पर चीजों को बदल सकता है। जावेद की कवितायेँ भी इसी बिंदु को प्रतिबिम्बित करती हैं। जैसे:

दिलों में तुम अपनी बेताबियां लेके चल रहे हो,
तो जिंदा हो तुम!
नज़र में अपनी ख़्वाबों की बिजलियाँ लेके चल रहे हो,
तो जिंदा हो तुम!

निष्कर्ष:

समकालीन गीतकारों के समक्ष 'वेटरन' और 'सीनियर' हो चुके जावेद अख्तर अब भले ही कम गीत लिखने लगे हों – इसकी भी एक वजह उनका एक्टिविज्म है – लेकिन गीतकार सदैव से जिस आइडियलिज्म की बातें अपने गीतों में करते रहे हैं, उसे कई बरस से जावेद अख्तर ने प्रतीकात्मक लड़ाइयों से आगे ले जाकर जमीन पर लड़ना शुरू कर दिया है। यह कहना दुरुस्त होगा कि इतिहास अगर महान गीतकारों को उनके गीतों के लिए याद रखेगा, तो वो जावेद अख्तर को उनके सामाजिक सरोकारों के लिए भी याद करेगा। इतिहास अगर महान गीतकारों को उनके गीतों के लिए याद रखेगा तो जावेद अख्तर को उनके सामाजिक सरोकारों के लिए भी हमेशा याद करेगा।

सन्दर्भ:

1. "जावेद अख्तर अवार्ड्स & नॉमिनेशंस लिस्ट - फिल्मीबीट " फिल्मीबीट, २०१८
2. डेविड जॉन मत्थूस (२००१)। क्वीवेर: पोयम्स एंड ग़ज़ल्स हार्पर कॉलिंस ISBN 978-81-7223-437-9
3. बीइंग: जावेद अख्तर ऑन एंग्री यंग मन – IBNLive" Ibnlive.in.com ७ अक्टूबर २००७
4. शुभम उपाध्याय,जावेद अख्तर को इतना गुस्सा क्यों आता है?https://satyagrah
5. in/article/116003/anatomy-of-javed-akhtars-anger

□ □ □